स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रुपरेखा

"परशुराम शुक्ल के बालकथा साहित्य में संवेदना और भाषिक सौंदर्य"

शोधछात्रा

सौ.जयश्री सिद्धेश्वर शेटे

एम.ए. (हिंदी), बी.एड.

शोधनिर्देशक

डॉ.पवन नागनाथ एमेकर

सहा.प्राध्यापक तथा शोधनिर्देशक

हिंदी विभाग

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,

हणेगाव ता.देगलूर जि.नांदेड

जनवरी 2024

प्रास्ताविक:

परशुराम शुक्ल जी हिंदी के उन कहानीकारों में से एक हैं जिन्होंने अपनी निष्ठा एवं लगन से साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है। वे बाल साहित्य के चर्चित कथाकार हैं। वे कई दशकों से निरंतर लिख रहे हैं। उन्होंने अपने बाल कथा साहित्य द्वारा बाल साहित्य को समृद्ध किया है। अधिकांश बाल साहित्यकारों में आपकी अलग पहचान है। बाल साहित्य के महत्व को ध्यान में रखकर आपने बाल संवेदना और नैतिक मूल्यों के साथ साहित्य की रचना की है। इस वजह से आपका साहित्य एक नई दिशा प्रदान करने वाला साहित्य है। आपने हिंदी बाल कथा साहित्य में अपनी प्रतिभा से अपना परिचय करा दिया है।

बाल साहित्य के अंतर्गत वह समस्त साहित्य आता है जिसे बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर लिखा गया हो। बाल साहित्य में एक ऐसी शक्ति होती है जो बच्चों के उन मनोभावों को पुष्ट करता है, जो बड़े होकर जीवन में सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। शुक्ल जी की कहानियाँ संस्कृति और बाल जीवन का अन्त:संबंध स्पष्ट करती है तथा राष्ट्रप्रेम, पशुप्रेम, मुल्यबोध से ओतप्रोत भरी हुई है। जिस निष्ठा और समर्पित भावना से आपने बाल साहित्य सृजन किया है, उसमें बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए रोचक कहानियाँ दिखाई देती है, जो राष्ट्रीयता, मानव धर्म, नैतिकता के साथ-साथ समाज का यथार्थ चित्रण करती है।

आपके साहित्य में बाल साहित्य के तीन रूप है। पहला रूप शिशु साहित्य जो ढाई वर्ष के बच्चों से लेकर पाँच वर्ष तक के बच्चों का होता है, उसमें आपकी भाषा शैली अत्यंत सरल और सहज दिखाई देती है, जो वैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त है। साहित्य का दूसरा रूप याने सामान्य बाल साहित्य जिसमें पाँच वर्ष के बच्चों से लेकर 11 वर्ष के बच्चों के लिए लेखन जिसमें बच्चे परोक्ष रूप में मनोरंजन के साथ नैतिक शिक्षा को ग्रहण करें। साहित्य का तीसरा रूप याने किशोर साहित्य इस पर भी आपके

विचार सराहनीय हैं। बाल कहानियों के अतिरिक्त आपने बाल उपन्यास बाल नाटक, बाल धारावाहिक, बाल कविताएँ आदि विधाओं पर भी आपने लेखन किया है।

विषय चयन की प्रेरणा :

आदिवासी कथा साहित्य से प्रेरित होकर आपने अनेक बालोपयोगी कहानियाँ लिखी। आपके बाल साहित्य में स्वस्थ बाल मनोरंजन, नैतिक विकास, ज्ञानवर्धन, देशभक्ति की भावना का विकास, संस्कृति का ज्ञान आदि विशेषता दिखाई देती है। इस कारण मैंने आपकी बाल कहानियों (साहित्य) को सूक्ष्मता से पढ़ा। मेरे मन में आपके बाल कथा साहित्य का भावविश्व निर्माण हुआ और फिर मन में बात आयी कि इसे शोध का विषय क्यों न बनाए! इस बारे में मार्गदर्शक डॉ.पवन नागनाथ एमेकर से कई बार विचार-विमर्श हुआ। इसकी फलश्रुति "परशुराम शुक्ल के बाल कथासाहित्य में संवेदना और भाषिक सौंदर्य" नामक विषय का चयन हुआ।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व :

संवेदना इन्सान के अंत:करण की गहन और मौन अभिव्यक्ति है। इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ या संकीर्णता के लिए कोई जगह नहीं होती है। जिस व्यक्ति को दूसरों के दु:खों को देखकर दु:ख महसूस नहीं होता या दु:खी व्यक्ति के लिए उनके मन में संवेदना उत्पन्न नहीं होती तो यह मान लेना चाहिए कि वह संवेदनाहीन मनुष्य है। संवेदना यह मानसिक विकास का एक अंश है। हमारी ज्ञानेंद्रियोंद्वारा वातावरण की कोई भी वस्तु या उद्दीपक को जानने की प्रक्रिया याने संवेदना है। हमारा जो मानसिक विकास होता है, उसकी प्रक्रिया को संज्ञान कहते है, संज्ञान का अर्थ है जानने की प्रक्रिया जिसमें सभी मानसिक क्रिया शामील होती हैं। इसमें पहली क्रिया होती है संवेदना, बालक की शिक्षा का प्रारंभ संवेदना से होता है। यह ज्ञान का द्वार है। इसलिए इसे जीवन का प्रारंभिक एवं सरल मानसिक अनुभव कहा जाता है।

साहित्य में भाषा के सौंदर्य के बिना प्राण नहीं आते और भाषा में व्याकरण के बिना सौंदर्य नहीं आता अर्थात जिस साहित्य की भाषा से मानसिक शांति तथा हृदयगत सौंदर्य प्रकट होता है वही उस साहित्य का भाषिक सौंदर्य होता है। यह हुई

साहित्य की बात परंतु भाषिक सौंदर्य से बच्चों को क्या लाभ हो सकते हैं? यह प्रश्न हमारे मन में उभरता है, तो इसका यही जबाब आता है कि भाषा अगर मुहावरेदार हो, उसमें लोकोक्तियों का उचित प्रयोग किया गया हो तो बच्चों में लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है। यह भाषा बच्चों को तथ्यों को संदर्भ में जोड़कर आसानी से समझने में मदद करती है। अत: यह स्पष्ट है कि मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भाषिक अभिव्यक्ति को सजीव बनाता है।

व्याकरण के माध्यम से भाषा को शुद्ध बोला, पढ़ा और शुद्ध लिखा जाता है। भाषा की शुद्धता व एकरुपता को बनाए रखने के लिए व्याकरण की आवश्यकता होती है। व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त कर हम भाषा का शुद्ध प्रयोग करना सीख सकते है। यह भाषा का सहचर है। भाषा में वाक्य, वाक्य में शब्द एवं शब्दों में वर्ण की स्थिति का निर्धारण व्याकरण की सहायता से ही होता है।

बच्चों के लिए लिखते समय कोई साहित्यकार भाषा प्रक्रिया के बारे में नहीं सोचता, उसके सामने तो बस बालक का चेहरा होता है, जिस तक वह अपने मन की भावनाएँ पहुँचाना चाहता है। वह एक गहरी डूबकी लगाकर अपने बचपन में उतरता है तो उसकी भाषा, संवेदना और अभिव्यक्ति खुद-ब-खुद ऐसी चपल-चंचल हो जाती हे, जो हर बच्चे को आकर्षित करे और खेल-खेल में जीवन की बड़ी से बड़ी बातों को बच्चे के जिज्ञासु मन तक पहुँचा दे। बच्चों के लिए लिखी गयी रचनाएँ वह सच्ची भावना के कारण बच्चों को अपने साथ वहाँ ले जाती है। यही कारण है कि बाल-साहित्य से बच्चों में सकारात्मक उर्जा आती है और देश समाज के लिए कुछ करने का भाव पैदा होता है। अर्थात बाल साहित्य बच्चों की संवेदना का विस्तार करता है।

प्रस्तावित शोध में पूर्ववर्ती शोध कार्यों से अतिरिक्त विशिष्टता :

बाल साहित्य का सृजन प्राचीन काल से किया जा रहा है, जिसमें पंचतंत्र के हितोपदेश प्रमुख है। वर्तमान में भी बाल साहित्यकारों द्वारा लेखन किया जा रहा है। लेकिन परशुराम शुक्ल जी वर्तमान में प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं। उनकी लगभग ढाई सौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। 3 खण्डों में उनका वाड्मय, 10 खण्डों में समग्र

बाल साहित्य प्रकाशित हो चुका है। शुक्ल जी देश में ऐसे बाल साहित्यकार है जिन्हें भारत सरकार के चार मंत्रालयों द्वारा सम्मानित किया गया है। उनके लेखन में राष्ट्रीयता, मानव धर्म, नैतिकता के साथ-साथ समाज का यथार्थ चित्रण ही विशिष्टता है। उक्त शोध में संवेदना और भाषिक सौंदर्य को रेखांकित करनेवाली बाल कहानियों का विवेचन अपेक्षित है।

शोध के उद्देश्य:

1) परशुराम शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय करना।

2) परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करना।

3) परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों से भारतीय समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं मूल्य बोध का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोधकार्य पर पूर्व में किये गये शोध कार्यों का अवलोकन:

बाल साहित्य को आधार बनाकर बहुत सारे शोध कार्य हुए हैं। परंतु परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में संवेदना और भाषिक सौंदर्य को आधार बनाकर अब तक कोई कार्य नहीं हुआ है। इससे पूर्व इनके बाल साहित्य में अन्य पक्षों पर शोधकार्य हुए जिनका विवरण निम्न प्रकार है :

1) 'डॉ.परशुराम शुक्ल का बाल साहित्य : एक अनुशीलन' शीर्षक पर शुचिता सेठ ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से 2009 में शोध कार्य पूर्ण किया।

2) 'डॉ.परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य में मनोरंजन और नैतिकता' शीर्षक पर राम शंकर आर्य ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से 2012 में शोधकार्य पूर्ण किया।

3) 'डॉ.परशुराम शुक्ल और डॉ.रोहिताश्व अस्थाना के बाल साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक पर रश्मि चौबे ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से 2012 में शोध कार्य पूर्ण किया।

4) 'हिंदी बाल कविता के नए प्रयोग : संदर्भ परशुराम शुक्ल' शीर्षक पर सुधा मिश्रा ने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से 2014 में शोधकार्य पूर्ण किया।

5)	'डॉ.परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' शीर्षक पर बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से 2017 में शोधकार्य पूर्ण किया।

6)	'परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में नैतिकता और विज्ञान' पर नरेश कुमारी द्वारा गुरुकुल कागड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार से 2022 में शोधकार्य पूर्ण किया।

7)	'डॉ.परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों के मूल्य' शीर्षक पर अमिता शर्मा ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास से 2017 में लघुशोध कार्य पूर्ण किया।

8)	'डॉ.परशुराम शुक्ल की बाल कविता : एक अध्ययन' शीर्षक पर राजेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से 2004 में शोधकार्य पूर्ण किया।

9)	'बाल सतसई की उपादेयता' शीर्षक पर ऋतिका सिंह द्वारा कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता से 2020 में लघु शोध कार्य पूर्ण किया।

प्रस्तावित शोधकार्य की मुख्य परिकल्पना :

प्रस्तावित शोधकार्य इस परिकल्पना पर आधारित होगा कि वर्तमान समय में जिन भारतीय मूल्यों का पतन हो रहा है उस पतन के कारण मानवता का भवन जिस नींव पर खड़ा है, वह नींव कमजोर है। उसी नींव को मजबूत करने के लिए बच्चों में पारम्पारिक मूल्यों यथा दया, करुणा, अहिंसा, सत्य, परोपकार आदि की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य है जिससे सशक्त राष्ट्र निर्मित हो सके।

प्रस्तावित शोध कार्य की अध्याय अनुसार अध्यायी विस्तृत रुपरेखा :

अध्याय - 1 हिंदी बालकथा साहित्य के विविध आयाम

परिचय

1.1 बाल साहित्य

1.1.1 बाल साहित्य की अवधारणा

1.1.2 बाल साहित्य का इतिहास

1.1.3 बाल साहित्य की आवश्यकता और उपयोगिता

1.1.4 बाल साहित्य के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानों के विचार

1.1.5 बाल साहित्य के सम्बन्ध में विदेशी विद्वानों के विचार

1.1.6 बाल साहित्य की विधाएँ

1.1.6.1 बाल कविता

1.1.6.2 बाल कहानी

1.1.6.3 बाल उपन्यास

1.1.6.4 बाल धारावाहिक

1.1.6.5 बाल नाटक

1.1.6.6 बाल एकांकी

1.1.6.7 सूचनात्मक बाल साहित्य

1.1.6.8 बालोपयोगी आलेख

1.1.6.9 बालोपयोगी लघुकथाएँ

1.1.6.10 अन्य

1.2 बाल कथा साहित्य

1.2.1 बाल कहानी

1.2.1.1 बाल कहानी की अवधारणा

1.2.1.2 बाल कहानी का इतिहास

1.2.1.3 बाल कहानी का महत्त्व

1.2.1.4 बाल कहानी के सम्बन्ध में विदेशी और भारतीय विद्वानों के विचार

1.2.1.5 बाल कहानी के स्वरूप

1.2.1.5.1 लोककथाएँ

1.2.1.5.2 पौराणिक कहानियाँ

1.2.1.5.3 राजा-रानी की कहानियाँ

1.2.1.5.4 साहस-यात्रा की कहानियाँ

1.2.1.5.5 जासूसी कहानियाँ

1.2.1.5.6 पशु-पक्षियों की बाल कहानियाँ

1.2.1.5.7 देव, दानवों और परियों की बाल कहानियाँ

1.2.1.5.8 रहस्य, रोमांच और फैन्टसी

1.2.1.5.9 हास्य कहानियाँ

1.2.1.5.10 वैज्ञानिक बाल कहानियाँ

1.1.2 बाल उपन्यास

1.2.2.1 बाल उपन्यास की अवधारणा

1.2.2.2 बाल उपन्यास का उद्भव और विकास

1.2.2.3 बाल उपन्यास का महत्व

1.2.2.4 बाल उपन्यास के सम्बन्ध में भारतीय और विदेशी विद्वानों के विचार

1.2.2.5 बाल उपन्यास के स्वरूप

1.2.2.5.1 धार्मिक अथवा पौराणिक उपन्यास

1.2.2.5.2 ऐतिहासिक उपन्यास

1.2.2.5.3 जासूसी उपन्यास

1.2.2.5.4 सामाजिक उपन्यास

1.2.2.5.5 रहस्य और रोमान्च सम्बन्धी उपन्यास

1.2.2.5.6 क्षेत्रीय उपन्यास

1.2.2.5.7 समस्याप्रधान उपन्यास

1.2.2.5.8 वैज्ञानिक उपन्यास

1.2.3 बाल धारावाहिक

1.2.3.1 बाल धारावाहिक की अवधारणा

1.2.3.2 बाल धारावाहिक का उद्भव और विकास

1.2.3.3 बाल धारावाहिक का महत्व

1.2.3.4 बाल धारावाहिक के स्वरूप

1.2.3.4.1 शिक्षा प्रधान बाल धारावाहिक

1.2.3.4.2 सामाजिक बाल धारावाहिक

1.2.3.4.3 रहस्य और रोमांच प्रधान बाल धारावाहिक

1.2.3.4.4 फैन्टसी

1.2.3.4.5 जासूसी बाल धारावाहिक

1.2.3.4.6 वैज्ञानिक बाल धारावाहिक

अध्याय - 2 हिंदी भारतीय बाल साहित्य में परशुराम शुक्ल का स्थान

परिचय

2.1 सामान्य व्यक्तिमत्व

2.1.1 वंश और जन्म

2.1.2 बचपन

2.1.3 शिक्षा

2.1.4 आजीविका

2.1.5 विवाह एवं परिवार

2.1.6 साहित्य सृजन

2.2 बाह्य व्यक्तित्व

2.2.1 शारीरिक सौष्ठव

2.2.2 खान-पान

2.2.3 वेशभूषा

2.2.4 दिनचर्या

2.2.5 रहन-सहन का स्त

2.3 आन्तरिक व्यक्तित्व

2.3.1 अन्तर्मुखी व्यक्तित्व

2.3.2 मानवतावादी विचारधारा

2.3.3 पारस्परिक पारिवारिक सम्बन्ध

2.3.4 सरलता, सहजता और संवेदनशीलता

2.3.5 स्पष्टवादिता

2.3.6 परम्परा और आधुनिकता का समन्वय

अध्याय -3 परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

3.1 बाल कहानी संग्रह

परिचय

3.1.1 जंगल की बाल कहानियाँ

3.1.2 प्राचीन ग्रन्थों की बाल कहानियाँ

3.1.3 शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ

3.1.4 परियों की बाल कहानियाँ

3.1.5 लोककथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ

3.1.6 राजा-रानी की बाल कहानियाँ

3.1.7 नैतिक बाल कहानियाँ

3.1.8 प्रेरणादायक बाल कहानियाँ

3.1.9 पंचतंत्र, हितोपदेश और जाक की बाल कहानियाँ

3.1.10 ऐतिहासिक बाल कहानियाँ

3.1.11 क्रान्तिकारियों की बाल कहानियाँ

3.1.12 वैज्ञानिक बाल कहानियाँ

3.1.13 मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बाल कहानियाँ

3.1.14 बाल विमर्श की कहानियाँ

3.2 बाल उपन्यास

3.2.1 लाल किरण

3.2.2 खजाने का रहस्य

3.3.1 मास्टर दीनदयाल

3.3.2 परमचन्द के कारनामे

3.3.3 वृक्षमानव

अध्याय-4 परशुराम शुक्ल के बाल कथा साहित्य में संवेदना

प्रास्ताविक

4.1 आस्था और विश्वास

4.2 संस्कृति का महत्व

4.3 स्वस्थ बाल मनोरंजन

4.4 अप्रत्यक्ष जीवन मूल्यों की शिक्षा

4.5 ज्ञानवर्धन

4.6 वैज्ञानिक खोजें और आविष्कार

4.7 भविष्य के हथियारों की परिकल्पना

4.8 नारी शक्ति की ललक

4.9 ऐतिहासिक और क्रान्तिकारी पुरुष तथा स्त्रियाँ

4.10 रोबोट का प्रयोग

4.11 कोरोना काल का चित्रण

4.12 अंधविश्वासों का दुष्परिणाम

4.13 विज्ञान के सदुपयोग और दुरुपयोग

4.14 हास्य और व्यंग्य

4.15 जासूसी रहस्य और रोमांस

4.16 मानवता का महत्व

4.17 साक्षरता का महत्व

4.18 प्रभावशाली संवाद योजना

4.19 धार्मिक आडम्बरों और भ्रष्टाचार का विरोध

4.20 वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

अध्याय - 5 परशुराम शुक्ल के बाल कथा साहित्य में भाषिक सौन्दर्य

5.1 भाषा का स्वरूप

5.1.1 संधियाँ

5.1.2 समास

5.1.3 शब्द गुण

5.1.4 शब्द शक्ति

5.1.5 कहावतें और मुहावरें

5.2 भाषा में ध्वनि विचार

5.2.1 ध्वनियों का स्वरूप

5.2.2 स्वर

5.2.3 व्यंजन

5.2.4 व्यंजन द्वित्व

5.2.5 व्यंजन संयुक्त

5.2.6 व्यंजन मुच्छ

5.3 भाषा में शब्द संगठन

5.3.1 तत्सम

5.3.2 तद्भव

5.3.3 देशज

5.3.4 विदेशी

5.3.5 शब्द युग्म

5.3.6 द्विशक्तियाँ

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ (बाल कहानियाँ)

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1) शुक्ल परशुराम, जंगल की बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

2) शुक्ल परशुराम, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

3) शुक्ल परशुराम, राजा-रानी की बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

4) शुक्ल परशुराम, ऐतिहासिक बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

5) शुक्ल परशुराम, क्रान्तिकारियों की बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

6) शुक्ल परशुराम, वैज्ञानिक बाल कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

7) शुक्ल परशुराम, मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक कहानियाँ, जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, 2015-16

8) शुक्ल परशुराम, बाल विमर्श की कहानियाँ, अशोक विहार दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2021

9) शुक्ल परशुराम, विमुक्त जातियों की लोक कथाएँ, भोपाल (म.प्र.) आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकदामी, 2021

10) शुक्ल परशुराम, खजाने का रहस्य, अशोक विहार दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2021

11) शुक्ल परशुराम, लाल किरण, दिल्ली, विज्ञान लोक, 2013

12) शुक्ल परशुराम, मास्टर दीनदयाल, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, 2013

13) शुक्ल परशुराम, परमचन्द के कारनामे, दिल्ली, हिन्दुस्थान प्रकाशन, 2016

14) शुक्ल परशुराम, वृक्षमानव, दिल्ली, सूर्यभारती प्रकाशन

सहाय्यक ग्रंथ सूची

1) सेठ शुचिता, समकालीन बाल साहित्य, जयपुर, अंकित पब्लिकेशन्स, 1926

2) राहुल छाया, बुन्देलखण्ड के साहित्यकारों का साहित्यिक अवदान, कानपुर, आशा प्रकाशन, 2013

3) आर्य रामशंकर, हिन्दी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता, कानपुर, आशा प्रकाशन, 2014

4) विजयानंद स्वामी और त्रिपाठी रामबहोरी, गोमती नगर लखनऊ, आर्यनगर, कानपुर, आशा प्रकाशन, 2017

5) जगताप संगीता, सतसई काव्य परम्परा और बाल सतसई, आर्यनगर, कानपुर, आशा प्रकाशन, 2017

6) गुप्ता प्रियंका, हिन्दी बाल साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन, लखनऊ, बुक पब्लिकेशन, 2017

7) आनंदवती, हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, कानपुर, आराधना ब्रदर्स, 2018

8) पाटिल प्रणोति, हिन्दी बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, कानपुर, आशा प्रकाशन, 2016

इंटरनेट

1) www.parshuramshukla.com

2) www.balprahri.com

3) www.devputra.com

शोधछात्रा

सौ.जयश्री सिद्धेश्वर शेटे

एम.ए. (हिंदी), बी.एड.

शोधनिर्देशक

डॉ.पवन नागनाथ एमेकर

सहा.प्राध्यापक तथा शोधनिर्देशक

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,

हणेगाव ता.देगलूर जि.नांदेड